कविता

स्कूल से भागा हुआ

स्कूल से भागा हुआ लड़का
भागकर खुश नहीं है
वह कहां जाए ! घर के सिवा

स्कूल पहली जगह है जो
बाध्य करती है
सारी इच्छाओं के विरूद्ध सख्त इमारत
की तरह लगती है।

भागे हुए लड़कों को
सब-कुछ पराया
वह चाहता है कि या तो स्कूल में मन लगे
या भागने का मलाल न रहे

घण्टा बजा
कुछ लड़के बरामदे में दिखे दूर
कुछ दौड़ते हुए
पेशाबघर में घुसे
उसे लगा
वे सब लाड़ले हैं सुधरे हुए
उन्हें सब प्यार करेंगे।

फिर वह
शहर के अनजान गर्म इलाके में
बंद दरवाजों के बाहर पड़ी
धूल में चलता रहा
जहां प्यास बहुत थी
जहां पेड़ नहीं थे
जहां दूर एक स्कूल था
जहां से
बच्चों के एक साथ रटने की आवाज
आ रही थी।

सुनकर
उसके चेहरे पर
ऐसा एक भाव आया
कि आगे चलकर
उसका चेहरा बहुत बदल जाएगा। ◆

नवीन सागर
'हर घर से गायब' से साभार